THREE DWARFS

तीन बौने

(एक लघु उपन्यास)

-मेनका अग्रवाल

प्रस्तावना –

यह कहानी अन्यंत गरीब परिवार में पैदा हुयी दो बहनों और जंगल में रहने वाले तीन बौनों की है। मालती और सुनैना ने अत्यंत गरीब परिवार में जन्म लिया और दुनिया में बहुत दुःख सहे। कहते हैं जीवन एक प्रवाह है और इसी प्रवाह में बहते हुये एक बार मालती और सुनैना बिछड़ जाते हैं। मालती दुर्घटनाग्रस्त हो जाती है और सुनैना को बौने उठा ले जाते हैं। पूरी कहानी पढ़िये ....

लेखिका – मेनका अग्रवाल

एक बार जंगल से सटे एक बड़े शहर की एक झोंपड़ी में मालती और सुनैना नाम की दो बहनें रहती थीं। उनके माता–पिता बहुत गरीब थे। उनके घर में उनकी मां और पिता के अलावा उनका एक छोटा भाई भी था लेकिन वह बहुत बीमार रहता था। उनके माता–पिता के पास इतने पैसे नहीं थे कि वे लोग उसका ईलाज करवा सकें। वे दोनों बहनें स्कूल भी नहीं जाती थीं। दोनों अक्सर अकेली ही घर के पास वाले गन्दे नाले के किनारे पुरानी माचिस की डिब्बियों को इकट्‌ठा करती, आपस में बांटती, जमीन पर सजाती और फिर से फैंक देती। दोनों बहनों में बहुत प्यार था। उनके पास खेलने के लिए कोई खिलौने नहीं थे। उनको तो दो समय का भर पेट खाना भी नसीब नहीं होता था। उनकी मां सुबह–सुबह कचरा चुग कर लाती और कबाड़ी वाले को बेचकर जो कुछ पैसे मिलते उससे

घर का खर्च चलाती थी। एक दिन मालती और सुनैना गन्दे नाले के पास पुरानी माचिस की डिब्बियों का खेल खेल रहे थे तो वहां पड़ौस की एक लड़की आयी और उन दोनों पर रौब जमाने लगी। उसने बताया कि उसके पिता ने उसे सरकारी स्कूल में दाखिला दिया दिया है और अंगूठा दिखाते हुये बोली कि अब मैं पढ़ूंगी–लिखूंगी, लेकिन तुम दोनों तो कुछ नहीं कर पाओगी क्यों कि तुम्हें तो अपने छोटे भाई की देखभाल करनी होती है और यदि तुम लोग स्कूल जाओगे तो घर में तुम्हारे बीमार भाई का ध्यान कौन रखेगा। यह कहकर वह चली गयी। सुनैना रूआंसा हो गयी और वह रोने लगी। मालती को भी वह बात बहुत बुरी लगी लेकिन यह तो उनके रोज की बात थी। पड़ौस का कोई ना कोई बच्चा वहां आता और उन दोनों को भरा–बुरा कहकर अपना टाईम पास करता और चला जाता। दोनों

बहनों के कोमल मन पर क्या गुजरती थी कोई नहीं जानता था। मालती ने सुनैना को चुप कराया और उसे फिर से खेल में बहलाने लगी।

उन दोनों की मां दोनों बच्चियों को बहुत चाहती थी, लेकिन वह गरीब थी, बेबस थी। वह अपने बच्चों को दो समय का खाना भी नहीं दे पाती थी। उनका पिता कोई काम नहीं करता था। सारे दिन खाली बैठा रहता। यदि कहीं से पैसे आ जाते तो वह शराब में उड़ा देता और घर पर कुछ नहीं देता। मां बर्तन मांजने का काम भी ढूंढती लेकिन उसे कोई काम नहीं मिलता था। उसका बेटा भूख के कारण बीमार रहता था। उसका इलाज नहीं हो सकता था। दोनों बहनें मां की स्थिती को जानती थीं। इसलिए जो कुछ मिल जाता, उसे ही बांटकर खाती थीं।

एक दिन मालती और सुनैना घर के पास बड़े से पत्थर पर बैठी थीं और चिड़ियों को देख रही थीं, उन्होंने आज सुबह से कुछ भी नहीं खाया था, मां बाहर गयी हुयी थी। तभी वहां का कचरा चुगने वाला एक आवारा लड़का आया और मालती को बिना मतलब बुरा–भला कहने लगा और उससे उलझने लगा। मालती ने कोई जवाब नहीं दिया, उसको इन सब बातों की आदत थी, यह उसके लिए रोज की बात थी। गाली–गलौच करते हुये वह आवारा लड़का चला गया। उसके जाने के बाद मालती की हिम्मत जवाब दे गयी और उसकी आंखों से टप–टप आंसू बहने लगे। उसके पास एक मोटा सा चूहा रोटी का एक टुकड़ा कुतर रहा था, कभी वह मालती को देखता कभी रोटी को कुतरता, सुबकते–सुबकते मालती यह सब देख रही थी, देखते–देखते वह कब चुप हो गयी उसे पता ही नहीं

चला। काफी देर बाद वह आसूं पोंछते हुये अन्दर कमरे में गयी यह सोचकर कि शायद आज मां को कुछ पैसे मिले हों तो शाम को भर पेट खाने को मिल जाये। उसके पीछे–पीछे सुनैना भी गयी।

———–——

मालती की उम्र उस समय दस साल की थी, उसकी छोटी बहन सुनैना आठ साल की और उसका छोटा भाई दो साल का था। उनका छोटा भाई बीमार रहता था। उस बस्ती में एक सरकारी हॉस्पिटल था जहां पर मरीजों का निःशुल्क इलाज होता था और कई सारी दवाईयां मुफ्त में मिलती थीं लेकिन उसका छोटा भाई भूखा रहने के कारण बीमार रहता था और उस पर कोई भी दवा असर नहीं करती थी। कई बार मां की गैरमौजूदगी में मालती भाई को डॉक्टर के पास लेकर गयी, लेकिन डॉक्टर जब भी दवाई देता तो यह

कहना ना भूलता कि अमुक दवाई खाना खाने के पहले देनी है और अमुक दवाई खाना खाने के बाद। मालती को यह समझ नहीं आता कि जब उसका भाई खाना खाता ही नही तो दवाई कब देनी है। डॉक्टर इस मामले में कुछ नहीं कर सकता था।

एक बार गन्दी बस्ती में सरकारी स्कूल की मास्टरनीजी बच्चों का नाम लिख ले गयी थी लेकिन मां ने उसे स्कूल नहीं भेजा। एक दिन मां जब बाहर गयी हुयी थी तो बीमार भाई को कन्धे से लगाये मालती अपनी छोटी बहन के साथ स्कूल जा पहुंची। थोड़ी ही देर में मां को भनक लग गयी तो दोनों को कान पकड़कर वापस ले आयी। दोनों बहनें सारे दिन घर के बाहर की चौखट के बाजू में रखे बड़े से पत्थर पर बैठी या तो चिड़ियों को देखा करती थी या माचिस की डिब्बियों को इकट्ठा करती थी और बीच–बीच में

मालती घर के अन्दर जाकर छोटे भाई को देख आया करती थी कि वह ठीक है या नहीं।

....

मालती और सुनैना आपस में बहुत प्यार करती थीं। मालती, सुनैना का बहुत ध्यान रखती थी। सुनैना भी अपनी बड़ी बहन की बात नहीं टालती थी। यदि एक रोटी भी होती तो दोनों एक दूसरे को खिलाने की कोशिश करती थीं और बाद में आधी–आधी बांट लेतीं।

एक शाम मालती और सुनैना बहुत देर तक उदास बैठी चिड़ियों को देख रही थीं, धीरे–धीरे शाम ढल गयी, मालती को याद आया कि उनका छोटा भाई घर में अकेला है, मां आयेगी और उनको यहां बैठा देखेगी तो बहुत मारेगी, हो सकता है शाम का खाना भी ना दे, वह दोनों भाग कर अन्दर गयीं तो उन्होंने देखा कि उनका भाई सोया हुआ है, मालती को आश्चर्य हुआ कि

उसका भाई दोपहर से अब तक सो रहा है, वह उसके पास गयी, तो उसने देखा कि उसका भाई बुखार से तप रहा था। इतने में मां आ गयी। मां ने भाई को गोद में लिया, दूध पिलाया और फिर से सुला दिया।

थोड़ी देर बाद मालती ने देखा कि मां रो रही है, उसकी सुबकने की आवाज सुनकर मालती भी सुबकने लगी। डरते–डरते मालती ने मां से पूछा "मां क्या हुआ" मां ने दोनों बहनों को अपने सीने से लगा लिया और फफक–फफक कर रोने लगी। मालती कुछ समझ पाती इससे पहले ही उसके पिता आ गये। आते ही वह मालती की मां को खाना लगाने के लिए कर कह हाथ–पांव धोने बाहर चले गये। "खाना खाते–खाते मालती की मां बोली मुझे जो बर्तन मांजने का काम मिला था, मेरे काम से नाखुश होकर मालकिन ने मुझे काम से निकाल दिया है, जब तक कोई काम नहीं

मिल जाता तब तक घर कैसे चलेगा।" पिता ने यह सुनकर कोई जवाब नहीं दिया और बाहर चले गये। रात को मालती के भाई को बहुत तेज बुखार आया, वह करहाने लगा, आवाज सुनकर मालती ने मां को उठाया, दोनों उठे और उसे पास की म्युनिसपल्टी के अस्पताल लेकर गये। डाक्टर के आते–आते सुबह हो गयी । डाक्टर ने आकर उसे मृत घोषित कर दिया।

मालती की मां, भाई की लाश को सीने से चिपटाये घर ले आयी, गन्दी बस्ती के कुछ दो–चार लोग जो अभी तक काम की तलाश में बाहर नहीं गये थे, इकट्ठे हुये और मालती के पिता के साथ क्रियाकर्म करने शमशान चले गये।

——————

मालती और सुनैना उस शाम वहीं घर के बाहर रखे पत्थर पर बैठी रहीं, जहां वह अक्सर बैठ कर

चिड़ियों को देखा करती थीं, आज बहुत देर तक वो दोनों वहां बैठी रहीं, उनको न भूख लग रही थी और न ही प्यास। बैठे–बैठे शाम गहरा गयी। ढेर सारे मच्छर उनके पास मंडराने लगे जैसे उनसे बातें करना चाह हों और कह रहे हों कि अब तुम झोंपड़ी के अन्दर चली जाओ वरना हम तुम्हारा खून पी जायेंगे। पास के शमशान से कुत्तों के रोने की आवाजें आने लगी। दिन भर की थकी हारी मां घर आयी तो दोनों को घर के बाहर रखे पत्थर पर बैठा पाया। मां कोई परवाह किये बिना घर के अन्दर गयी और खाना खाकर सो गयी।

मालती सोच रही थी कि यह सब ऐसा ही चलेगा। उसके जीवन में कभी कुछ ठीक नहीं हो सकता। उसका जीना व्यर्थ है। ना तो भर पेट खाना मिलता है, और ना हीं वह स्कूल जाती है। वह अपनी मां पर बोझ बनी हुयी है। यदि वह नहीं होती तो मां को उसके

हिस्से की रोटी का इन्तजाम नहीं करना पड़ता। यह सब सोचते–सोचते मालती का मन भर आया, जो मालती अभी तक निःश्चल बैठी थी, उसके मन में समुद्र उफान लेने लगा। वह ना जाने क्या सोचकर उठी और घर के अन्दर न जाकर सड़क के किनारे–किनारे चलने लगी। वह जान गयी थी कि इस दुनिया में उसकी किसी को परवाह नहीं है। इस दुनिया में उसके होने ना होने से कोई फरक नहीं पड़ता। फिर वह क्यों जिये जा रही है। किस उम्मीद में जिये जा रही है। वह मर क्यों नहीं जाती। उसके मर जाने से कम से कम यह तो होगा कि उसकी मां को उसके हिस्से का कचरा कम चुगना पड़ेगा। दस साल की छोटी सी बच्ची ना जाने क्या–क्या सोचते हुये चली जा रही थी। उसे यह भी ध्यान नहीं रहा कि उसके पीछे – पीछे उसकी छोटी बहन सुनैना भी चल रही है। मालती और सुनैना ने

सुबह से कुछ नहीं खाया था। मालती को भूख प्यास कुछ नहीं लग रही थी। लेकिन सुनैना के होंठ प्यास से सूख रहे थे। शाम का अंधेरा गहरा रहा था। मालती को यह ध्यान ही नहीं रहा कि उसकी बहन उसके पीछे–पीछे चल रही है। उसे आगे कुछ ठीक से दिखाई नहीं दे रहा था। मालती चलते–चलते काफी आगे निकल गयी और उसकी बहन सुनैना काफी पीछे छूट गयी। रात के अंधेरे में राह चलते चलते एक मोटरसाईकिल सवार ने मालती को टक्कर मार दी। वह उछल कर दूर जा गिरी। भीड़ इकट्ठी हो गयी, मनोहर बाबू भी उसी भीड़ का हिस्सा थे, उन्होंने ध्यान से देखा कि बच्ची को ज्यादा नहीं लगी है बस थोड़े सी मरहम–पट्टी की आवश्यकता है। सब लोगों को दूर हटाकर मनोहर बाबू उस लड़की को घर ले आये।

सुबह से कुछ नहीं खाया था। मालती को भूख प्यास कुछ नहीं लग रही थी। लेकिन सुनैना के होंठ प्यास से सूख रहे थे। शाम का अंधेरा गहरा रहा था। मालती को यह ध्यान ही नहीं रहा कि उसकी बहन उसके पीछे–पीछे चल रही है। उसे आगे कुछ ठीक से दिखाई नहीं दे रहा था। मालती चलते–चलते काफी आगे निकल गयी और उसकी बहन सुनैना काफी पीछे छूट गयी। रात के अंधेरे में राह चलते चलते एक मोटरसाईकिल सवार ने मालती को टक्कर मार दी। वह उछल कर दूर जा गिरी। भीड़ इकट्ठी हो गयी, मनोहर बाबू भी उसी भीड़ का हिस्सा थे, उन्होंने ध्यान से देखा कि बच्ची को ज्यादा नहीं लगी है बस थोड़े सी मरहम–पट्टी की आवश्यकता है। सब लोगों को दूर हटाकर मनोहर बाबू उस लड़की को घर ले आये।

भूख–प्यास के कारण सुनैना चलते–चलते बेसुध होकर सड़क के किनारे ही गिर गयी।

———–––

मनोहर बाबू जल्द मालती को घर ले आये और डॉक्टर को फोन लगाया, डॉक्टर साहब आ गये, मालती को ज्यादा चोट नहीं लगी थी। डाक्टर साहब ने मालती की मरहम पट्टी की और दवाईयां लिख कर चले गये, थोड़ी देर बाद मालती को होश आया तो उसने मनोहर बाबू को अपने सिरहाने बैठा पाया। मनोहर बाबू ने उसे खाने को कुछ दिया और उसके सिर पर हाथ फेरते हुये उसके बारे में पूछने लगे। मालती ने बिना लाग लपेट के बता दिया कि वह एक कचरा चुगने वाले गरीब परिवार में जन्मी है तथा उसे अपने परिवार तथा इस दुनिया से कोई लेना देना नहीं है वह मर जाना चाहती है। जब मनोहर बाबू ने उसके परिवार के सदस्यों के

बारे में पूछा तो उसके मुंह से निकला कि उसके मां–पिता और भाई की मौत हो गयी है और वह इस दुनिया में अकेली है और कहीं दूर जाना चाहती है जहां इस दुनिया के दुःख उसे न झेलने पड़ें। मनोहर बाबू ने मालती को ढ़ाढस बंधाया और बोले "तुम्हें कहीं दूर जाने की आवश्यकता नहीं है तुम अब यहीं हमारे साथ रहोगी और स्कूल में पढ़ाई करोगी", यह सुनकर जैसे मालती को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ और उसके पर लग गये हों।

मनोहर बाबू उस शहर के सबसे अमीर आदमी विश्वेश्वर राय के दीवान थे। विश्वेश्वर राय बड़े सहृदय व्यक्ति थे। बड़े घराने के कारोबारी होने के कारण घर में धन की गंगा बहती थी, बेसहारा लोगों की सुध लेने के उददे्श्य से उन्होंने एक अनाथ आश्रम खोला था जिसमें बच्चों के लिए एक स्कूल की भी व्यवस्था थी।

मनोहर बाबू विश्वेश्वर राय के बड़े विश्वास पात्र थे। या यूं कहिये कि वे उनके बायें हाथ थे। मालती अब उस आश्रम में रहने लगी और उस आश्रम के कामों में हाथ बंटाने लगी। धीरे-धीरे मालती ने आश्रम के सभी कर्मचारियों, शिक्षकों और साथियों का मन जीत लिया। मालती ने जो गरीबी अपने घर में देखी थी, उसके मुकाबले, आश्रम किसी स्वर्ग से कम नहीं था। मनोहरबाबू मन ही मन मालती की बड़ी सराहना करते। आश्रम के काम करने के लिए मनोहरबाबू मालती को मना करते और स्कूल जाकर पढ़ने को कहते। कभी-कभी मालती अनमने से स्कूल में जाती, उसका मन पढ़ाई में नहीं लगता था, फिर भी वह स्कूल जाती और धीरे-धीरे ही सही अब वो कुछ- कुछ शब्द पढ़ने लगी थी।

आश्रम में मालती को कोई तकलीफ नहीं थी, खाने को खूब था, पढ़ने को खूब था, खेलने को खूब था, बातें करने के लिए बहुत सारे उसकी हम उम्र के बच्चे थे। लेकिन जब मालती को अपने घर की याद आती, अपनी बहन की याद आती तो उसका मन भारी हो जाता। वह सोचती कि उसकी छोटी बहन न जाने किस हालत में होगी। वह चाहती थी कि अपनी छोटी बहन को भी अपने साथ ले आये। लेकिन फिर वह डर जाती कि यदि आश्रम वालों को पता चलेगा कि वह अनाथ नहीं है तो उसे भी आश्रम से निकाल देंगे। वह यह सोच कर ग्लानी से भर जाती कि उसने अपने स्वार्थ के कारण मनोहर बाबू से झूठ बोला। लेकिन उसे इस बात का संतोष था कि उसके भाई के मर जाने और उसके खुद के इस तरह से घर छोड़ देने से उसकी मां

पर कमाने का बोझ कम हो जायेगा और उसकी बहन सुनैना को भर पेट भोजन मिलेगा।

एक शाम उसे सुनैना की बहुत याद आने लगी। वह उसे एक बार देख आना चाहती थी। वह अपने आप को रोक नहीं पायी और शाम के अंधेरे में लम्बी सी चुनरी ओढ़कर छुपते–छुपाते अपने घर की तरफ जाने लगी। दो घण्टे पैदल चलने के बाद वह घर पहुंची। घर पर उसके मां–पिता नहीं बल्कि कोई और लोग रह रहे थे। वह अपनी बहन और अपने माता–पिता के बारे में जानना चाहती थी। लेकिन उसकी हिम्मत नहीं थी कि वह किसी से बात करे। यदि वह किसी से बात करती तो लोग उसे पहचान लेते और उसे फिर से वही नारकीय जिंदगी जीनी पड़ती। उसी समय बस्ती के कुछ लोग मालती और उसके माता–पिता के बारे में बात कर रहे थे। मालती ने

ध्यान लगा कर सुना, उसके कानों में लोगों की बातें सुनाई दीं। लोग कह रहे थे कि "मालती और सुनैना शाम के अंधेरे में साथ–साथ ना जाने कहां चली गयीं। मालती की मां ने दोनों को बहुत ढूंढा लेकिन वे दोनों कहीं नहीं मिलीं। दोनों के खो जाने के बाद मालती के माता–पिता भी काम की तलाश में दूसरे शहर में चले गये, घर खाली देखकर दूसरे लोगों ने कब्जा जमा लिया जब मालती के मां–पिता वापस आये तो उन्हें वहां से भगा दिया गया अब पता नहीं कहां होंगे सब लोग"।

जैसे ही मालती ने यह सुना उसे होश आया कि जिस दिन उसने घर छोड़ा था उसकी छोटी बहन सुनैना भी उसके साथ पत्थर पर बैठी थी। हो सकता है वह उसके पीछे–पीछे चल रही हो और रास्ता भटक गयी हो। उसे अपनी बहन की चिन्ता होने लगी। उसकी

आंखों में आंसू आ गये। वह अपने आप को कोसने लगी कि वह कितनी बुरी है, जो अपनी बहन का ध्यान भी नहीं रख सकती।

वह सोचते–सोचते आश्रम वापस लौट आयी। आश्रम आकर उसने मनोहर बाबू को सारी बात सच–सच बता दी और अपने झूठ बोलने के लिए मांफी भी मांगी। मनोहर बाबू ने मालती के बताये अनुसार सुनैना और उसके माता–पिता का पता करवाया, लेकिन उनका कोई पता नहीं चल सका।

मालती को आश्रम में सभी प्रकार का सुख था। माता–पिता को लेकर भी वह आश्वस्त हो गयी थी कि उसके माता–पिता शहर छोड़ने के बाद कोई न कोई काम धन्धा ढूंढ ही लेंगे। वैसे भी अब उसके परिवार में खाने वाले भी दो थे और कमाने वाले भी दो। ऐसे में गरीब आदमी का जीवन जीना ज्यादा दुखदायी नहीं

होता। लेकिन मालती को दुख था तो केवल अपनी प्यारी छोटी बहन सुनैना का। वह ना जाने किस हाल में होगी। वह हर समय भगवान से अपनी छोटी बहन की खुशहाली की कामना करती।

समय कभी एक सा नहीं रहता। विश्वेश्वर राय साहब समय के साथ भगवान को प्यारे हो गये। उनके जाने के बाद उनके सुपुत्र को इस प्रकार की सामाजिक सेवा में कोई रूचि नहीं थी। उन्होंने आश्रम और स्कूल की बहुत सारी जमीन एक बड़े होटल के मालिक को बेच दी और एक छोटी सी जगह आश्रम के लिए छोड़ दी। मनोहरबाबू ने इसका बहुत विरोध किया लेकिन उनकी एक नहीं चली। आश्रम के लिए राय साहब, मरने से पहले कुछ फण्ड का अलग से इन्तजाम करके गये थे, उसी से अब आश्रम का खर्चा चल हा था। लेकिन फिर भी पहले जैसी बात नहीं रह गयी थी।

और खासकर जगह की बड़ी दिक्कत होती थी। अब आश्रम और स्कूल एक छोटी सी जगह में ही सिमट कर रह गये थे।

अब मालती पढ़ लिख गयी थी। मनोहर बाबू को मालती पर पूरा विश्वास था। अब उनकी भी उम्र हो रही थी। उन्हें आश्रम की व्यवस्था की चिन्ता नहीं थी, क्यों कि उनको मालती पर भरोसा था। वह मालती के सिर पर हाथ रखते और कहते कि उनके मरने के बाद वही आश्रम को संभालेगी।

आश्रम के सारे काम वह स्वयं देखती थी। वह आश्रम को छोड़कर कहीं नहीं गयी। अनामिका को छोड़कर मालती के साथ के सारे बच्चे, आश्रम से पढ़ लिख कर किसी ना किसी काम धंधे पर लग गये थे। लेकिन मालती कहीं नहीं जाना चाहती थी। मालती आश्रम के सभी बच्चों में अपनी स्वयं की और सुनैना

की झलक देखती। वह आश्रम के बच्चों का बहुत ध्यान रखती और आश्रम का सारा काम–काज उसने संभाल रखा था। इसके बदले वह आश्रम से कोई शुल्क नहीं लेती। बल्कि आश्रम के बच्चों की सेवा करना वह अपना सौभाग्य मानती थी। ऐसे ही समय बीत रहा था। मनोहरबाबू आश्रम का सारा काम मालती के कंधे पर सौंपकर भगवान को प्यारे हो गये। अब आश्रम के छोटे से लेकर बड़े–बड़े कामों तक की सारी जिम्मेवारी मालती पर आ गयी थी। विश्वेश्वर बाबू की जिस रकम पर ब्याज आता था, उससे आश्रम का खर्चा चलता था। शुरू–शुरू में तो सब कुछ ठीक था लेकिन अब महंगाई भी बढ़ गयी थी, और आश्रम में बच्चे भी। शिक्षकों को वेतन देना भी मुश्किल हो रहा था। मालती को आश्रम की बहुत चिंता थी।

अब पीछे चलते हैं –

जब बेहोश होकर सुनैना सड़क पर गिर गयी थी तो काफी देर तक वह सड़क के किनारे ही पड़ी रही। जब उसे होश आया तो उसने देखा कि वह एक छोटे से बहुत ही सुन्दर मकान के अन्दर पलंग पर लेटी हुयी है। वह चौंक कर उठी तो उसने देखा कि उसके पास नन्नू बैठा हुआ था। नन्नू ने उसे पानी का गिलास लाकर दिया। सुनैना ने पानी पिया और पूछा कि वह यहां कैसे आयी। नन्नू कुछ नहीं बोला और उसने सुनैना को खाने के लिए केक का बड़ा सा टुकड़ा और कुछ अंगूर लाकर दिये। सुनैना ने आज से पहले कभी भी केक और अंगूर नहीं देखे थे। वह हैरत भरी निगाहों से देख रही थी। सुनैना ने भाई के मरने के बाद कल से कुछ नहीं खाया था। सुनैना ने केक और अंगूर खाकर कुछ राहत महसूस की। सुनैना को खुश

देखकर नन्नू भी बहुत खुश हुआ। नन्नू रात भर सुनैना के पास बैठा रहा और उसे देखता रहा। सुनैना भूख और थकान के कारण बेहोश थी। लेकिन नन्नू उसके उठने के इंतजार में उसके पास कुर्सी लगाकर बैठा रहा और उसे निहारता रहा। सुनैना के मासूम चेहरे पर गरीबी, कष्ट, भूख के निशान साफ देखे जा सकते थे। तभी बन्नू, और छन्नू जंगल से लकड़ी काटकर ले आये। सुनैना को सही सलामत देखकर बन्नू और छन्नू बहुत खुश हुये।

....

बन्नू, नन्नू और छन्नू तीन भाई थे जो कि बौने थे। बन्नू सबसे बड़ा जबकि छनन्नू सबसे छोटा था। तीनों शहर से सटे जंगल में एक छोटे से खूबसूरत मकान में रहते थे जो कि उनके दादा ने बनवाया था। मकान के पास एक बगीचा भी था। मकान पुराना होने

के बावजूद बहुत सुंदर और मजबूत था। अब न तो उनके दादा जिन्दा थे और न ही मम्मी–पापा। उन तीन बौनों का इस दुनिया में और कोई नहीं था। वो बिल्कुल अकेले थे। मरते समय उन बौनों के पिता ने कहा था कि शहर के लोग बहुत खतरनाक और स्वार्थी होते हैं इसलिए जहां तक हो सके तुम वहां तक शहर के लोगों से दूर ही रहना, और जंगल से निकाला हुआ सामान बेचकर जल्दि से घर वापस आ जाना। जंगल आदमी की सभी आवश्यकतायें पूरी कर देता है इसलिए तीनों भाई आराम से जंगल में एक दूसरे की मदद करते हुये रहना। मरने से पहले बौनों के पिता ने बौने बच्चों को जीने की सारी कलायें सिखायी थीं जैसे आग जलाकर जंगली जानवरों का सामना करना, बरसात का पानी गढ़्ढे में इकट्ठा करना और गन्दे पानी को छानकर साफ करना, मिट्टी के बर्तनों में आटे को

फेंटकर केक बनाना, मधुमख्खी के छत्ते से शहद निकालना, आग जलाकर मच्छरों को भगाना, गेहूं और मक्का की खेती करना, अंगूरों से वाइन बनाना, जंगल से लकड़ी काटकर शाम ढलने से पहले ही घर आकर दरवाजा बन्द कर देना और रात को घर के बाहर नहीं निकलना आदि।

बन्नू 15 साल का, नन्नू 10 साल का और छन्नू 08 साल का था। तीनों भाई, पिता के जाने के बाद पहले तो बहुत दुखी हुये लेकिन बाद में संभल गये। बन्नू बहुत समझदार था उसे अपनी जिम्मेदारियों का अहसास था। वह अपने छोटे भाईयों का बहुत ध्यान रखता था, उन्हें किसी चीज की कमी महसूस नहीं होने देता था। यहां तक कि यदि कभी जंगल में दूर जाना होता था तो वह स्वयं जाता अपने छोटे भाईयों को नहीं जाने देता। जंगल से इक्ट्ठे किये गन्ने, जंगली फलों

को बेचने के लिए बन्नू ने पास के गांव में रहने वाले एक आदमी से बात कर रखी थी। वह आदमी हर सप्ताह बौनों के घर आता और सामान लेकर शहर जाकर बेच देता और आधे पैसे खुद रखता और आधे पैसे बन्नू को देता।

बन्नू आदमी की इस हरकत को जानता था लेकिन वह कुछ नहीं कहता क्यों कि उसे डर था कि यदि वह इस आदमी से कुछ भी कहेगा तो वह झगड़ा करेगा और हो सकता है फिर सामान बेचने के लिए उसे ही शहर जाना पड़े, ऐसे में उसके भाईयों को जंगल में अकेले रहना पड़ेगा। वह अपने भाईयों को अकेला नहीं छोड़ना चाहता था।

नन्नू बड़ा शर्मिला था वो ज्यादातर घर में ही रहकर खाना बनाता था। वो बहुत उदास भी रहता था, ज्यादा किसी से बात नहीं करता था। उसके पिता ने

उसे शहर से एक गिटार लाकर दिया था। नन्नू उस गिटार पर ही कुछ बजाने की कोशिश करता लेकिन उसका मन नहीं लगता था। वह चाहता था कि शहर से कुछ ऐसी चीज घर में लायी जाये जिससे उसका मन लगा रहे और उसे बाहर नहीं जाना पड़े।

छन्नू सबसे छोटा और बहुत चुलबुला था। वह बात–बात में रूठ जाया करता था। लेकिन वह अपने बड़े भाई का आज्ञाकारी था। राम–लक्ष्मण की जोड़ी थी दोनों की। बन्नू जो भी काम छन्नू को बताता, वह करता। ऐसे ही दिन बीते जा रहे थे। जंगल में न खाने की कमी थी, न घर में कोई तकलीफ। लेकिन वो तीनों अकेले रहते–रहते बोर हो चुके थे। उनके जीवन में कोई रस नहीं था। तीनों शहर जाकर कुछ काम करना चाहते थे। तीनों भाईयों ने सुन रखा था कि शहर में सर्कस होते हैं जहां बौनों को लोग बहुत चाव

से देखते हैं और तालियां बजाते हैं। इस काम में बहुत सारा पैसा भी मिलता है। उन्होंने कई बार जंगल का घर छोड़कर शहर जाने की सोची लेकिन बन्नू को अपने पिता की बातें याद आ जाती और वह हर बार कोई ना कोई बहाना बनाकर शहर जाने की बात को टाल देता।

बन्नू जानता था कि वह ज्यादा दिनों तक यह बात टाल नहीं पायेगा लेकिन फिर भी वह पिता कि इस बात को याद करता कि जंगल, आदमी की सभी आवश्यकतायें पूरी कर देता है। लेकिन इस बार बन्नू का मन भी शहर जाने के लिए उतावला हो रहा था। जंगल में करने के लिए कुछ खास नहीं था। जंगल में रहते–रहते वह उक्ता गया था, इसके अलावा उस पर अपने छोटे भाईयों का दवाब भी था।

इन सब बातों को सोचते हुये बन्नू शहर जाने के लिए तैयार हो गया। तीनों भाई पक्का मानस बनाकर

सुबह सुबह उठे। रास्ते के लिए जरूरी सामान इकट्ठा किया और घर को ताला लगाकर शहर की तरफ चल पड़े। शहर जाकर उन्होंने देखा कि लोग उनको देखते हैं और ताली बजाकर उनका मजाक उड़ाते हैं। उन्हें बहुत बुरा लगा। उन्होंने लोगों से सकर्स का पता पूछा लेकिन किसी ने उन्हें ठीक तरह से नहीं बताया। धीरे धीरे शाम ढल गयी। भूख–प्यास और बहुत चलने के कारण वो थक गये थे। शहर में उनका स्वागत नहीं हुआ। उन्हें जंगल की याद आने लगी। छन्नू बोला "इतने गन्दे शहर में कौन आना पंसद करेगा, इससे तो अपना जंगल और अपना छोटा सा घर ही बहुत अच्छा है"। और तीनों बौनों ने जंगल वापस लौटने का फैसला किया। वो तीनों बौने दुःखी मन से सड़क के किनारे किनारे चल रहे थे। अंधेरा हो चला था। तभी चलते चलते उन्होंने सड़क पर सुनैना को पड़ा देखा। सुनैना

की सांसे चल रही थी। बन्नू जानता था कि बिमार और घायल लोगों को अस्पताल में भर्ती करवाया जाता है। लेकिन वह यह भी जानता था कि गरीब लोगों का ईलाज करवाना बहुत मुश्किल है। और फिर वे लोग अस्पताल का पता भी तो नहीं जानते। तीनों भाई गरीब लड़की को पीठ पर लादे जंगल ले आये और घर लाकर आराम से लिटा दिया।

बन्नू ने सुनैना को बताया कि जब वे तीनों शहर के लोगों से दुःखी होकर जंगल वापस आ रहे थे, तब उन्होंने सुनैना को वहां सड़क पर गिरा हुआ देखा। और रात के अंधेरे में उसे वहां से उठाकर यहां जंगल में ले आये। सुनैना ने खिड़की के बाहर देखा वहां सच में जंगल के अतिरिक्त कुछ नहीं था। उसने अपनी बड़ी बहन मालती के बारे में पूछा तो तीनों बौने एक–दूसरे का मुंह ताकने लगे। सुनैना बहुत रोई। तीनों भाईयों ने

सुनैना को चुप कराया। पलंग के नर्म मुलायम गद्दों और केक की खुशबू ने उस गरीब लड़की के गम को कुछ कम कर दिया।

जंगल के साफ हवा–पानी और भरपेट फल, सब्जी, शहद खाकर सुनैना के नैन–नक्श किसी गुड़िया के जैसे खिल उठे। आठ साल की जीती जागती गुड़िया। नन्नू सुनैना का बहुत ध्यान रखता। तीनों भाई सुनैना को पाकर अपना सारा दुःख, सारा अकेलापन भूल गये। उन्हें अपना जंगल और अपना घर अब पहले से भी ज्यादा खूबसूरत नजर आने लगा।

कुछ दिनों बाद सुनैना को फिर से अपने माता–पिता और खासकर मालती की याद सताने लगी। उसने बन्नू से कहा की वह अपने घर जाना चाहती है। लेकिन नन्नू नहीं चाहता था कि सुनैना वापस अपने घर जाये। वह जिद करने लगा कि सुनैना तुम हमारे

साथ ही रहो। मैं तुम्हें कभी दुःख नहीं पहुंचाउंगा, तुम्हारा बहुत ध्यान रखूंगा। बन्नू और छन्नू भी चाहते थे कि सुनैना उनके साथ ही रहे लेकिन बन्नू बात की गंभीरता जानता था। वह जानता था कि सुनैना को एक दिन जाना ही होगा। बन्नू, सुनैना को लेकर शहर आया और सुनैना के बताये रास्ते पर चलकर सुनैना के घर पहूंचा। घर पर सुनैना के माता–पिता नहीं वरन कोई और लोग ही रह रहे थे। उसने पड़ौस की चाची से पूछा कि मां कहां है तो चाची ने बताया कि "तुम्हारे और मालती के चले जाने के बाद तुम दोनों को तुम्हारी मां ने बहुत ढूंढा लेकिन तुम लोग नहीं मिले। तुम्हारी मां और पिता ये शहर छोड़ कर दूसरी जगह चले गये। तुम्हारी इस झौंपड़ी पर दूसरे लोगों ने कब्जा जमा लिया है।"

सुनैना बहुत रोई लेकिन वह क्या करती। मालती का भी कुछ अता–पता नहीं था। सुनैना दिन भर मकान के पास वाले पेड़ के नीचे बैठी रही। किसी ने उससे पानी या खाने के लिए नहीं पूछा। सुनैना को बस्ती के किसी आदमी से उम्मीद भी नहीं थी। उसने बन्नू के साथ वापस जंगल आने का निश्चय किया।

सुनैना के जाने के बाद नन्नू दिन भर रोता रहा। कभी वह अपनी मां की बनाई पेंटिंग को देखता और कभी सुनैना को याद करता। उसे अपने बन्नू भैया पर बहुत गुस्सा आ रहा था। उसने दिन भर से कुछ नहीं खाया था। छन्नू ने भी नहीं। शाम ढलने लगी लेकिन अभी तक बन्नू नहीं आया। छन्नू ने नन्नू को दिलासा दिलाते हुये कहा कि इतनी शाम तक भैया घर नहीं आये तो हो सकता है कि बन्नू भैया सुनैना को वापस साथ लेकर आयें, चलो दरवाजे पर जाकर देखते हैं,

नन्नू के दूबते दिल को जैसे तिनके का सहारा मिल गया हो। नन्नू और छन्नू अपने आंसू पोंछते हुये दरवाजे के पास पहूंचे ही थे कि बन्नू और सुनैना को दरवाजे पर खड़ा पाया। नन्नू को अपनी आंखों पर जैसे विश्वास नहीं हो रहा था। वह जोर–जोर से दहाड़ मार कर रोने लगा। सुनैना दरवाजे के पास खड़ी होकर सुबकने लगी। बन्नू और छन्नू भी रोने लगे। उन बिन मां बाप के बच्चों को चुप करवाने वाला वहां कोई नहीं था।

लेकिन नन्नू के लिए ये खुशी के आंसू थे। सबसे पहले वही चुप हुआ। उसने एक– एक करके सभी को चुप करवाया। आज शाम उसने सभी के लिए बहुत अच्छा खाना बनाया। उसकी सुनैना से आंखें मिलाने की हिम्मत नहीं थी, क्यों कि उसको सुनैना के माता–पिता

नहीं मिलने की अत्याधिक खुशी थी। खुशी से वह भूखा ही सो गया।

....

सुनैना जिस गरीबी को देख चुकी थी उसके सामने बौनों का यह छोटा सा घर किसी महल से कम नहीं था और यहां जंगल के स्वच्छ वातावरण ने सुनैना के तन–मन को सुगंधित कर दिया। वह बौनों के साथ जंगल में लकड़ियां काटती, मधुमक्खियों का शहद इकट्ठा करने में बन्नू और छन्नू बौने की मदद करती। पास की गेहूं और मक्के की क्यारियों से घास–फूस निकालती और घर पर नन्नू के साथ खाना बनाने में उसकी मदद करती। नन्नू, सुनैना का बहुत ध्यान रखता, उसे किसी बात की तकलीफ नहीं होने देता। दिन महीने साल गुजरते गये पता ही नहीं चला। गरीब और अनाथ बच्चे बड़े होते गये। अब घर का सारा

काम सुनैना ने संभाल लिया था। अब नन्नू को खाना नहीं बनाना पड़ता था। घर की साफ–सफाई भी सुनैना स्वयं ही करती थी। सभी सुनैना से और सुनैना सभी से खुश थी।

सुनैना अब 18 साल की हो गयी थी और नन्नू 20 साल का लेकिन लम्बाई में सुनैना नन्नू को पीछे छोड़ चुकि थी। वह बन्नू से भी लम्बी हो गयी थी। यह बात नन्नू को कुछ अटपटी सी लगती थी, लेकिन सुनैना ने इस बात पर कभी ध्यान नहीं दिया। चारों बच्चे अब बहुत सारी बातें समझने लगे थे।

सब कुछ ठीक–ठाक चल रहा था लेकिन अकाल पड़ने के कारण जंगल की हालत बहुत खराब हो गयी थी। पानी नहीं बरसने के कारण फल, सब्जी, शहद सब कुछ कम हो गया था। अब जंगल में जिंदा रहना

एक समस्या बनता जा रहा था। चारों मिलकर इस बारे में सोचते कि क्या किया जाये।

एक दिन छन्नू बौना, अपने बड़े भाई बन्नू से बोला कि किसी को कोई चिन्ता करने की जरूरत नहीं है, अब वह बड़ा हो गया है और शहर जाकर कोई काम करेगा। वहां से पैसा कमाकर शहर से खाने-पीने की चीजें लाकर सभी की आवश्यकतायें पूरी करेगा। बन्नू के बहुत मना करने के बाद भी छन्नू नहीं माना और शहर के लिए निकल गया।

बहुत दिन बीत जाने के बाद भी छन्नू नहीं आया और न ही उसका कोई संदेश आया तो बन्नू को चिंता हुई, वह नन्नू से बोला कि तुम घर पर सुनैना का ध्यान रखना, मैं बन्नू को ढूंढने शहर जाता हूं। नन्नू बोला कि वह भी उसके साथ चलेगा लेकिन सुनैना को अकेले जंगल में नहीं छोड़ा जा सकता था इसलिए बन्नू

अकेले ही शहर की तरफ रवाना हुआ। वहां जाकर बन्नू ने छन्नू के बारे में पूछताछ की लेकिन उसका कोई पता नहीं चला। बन्नू को याद आया कि छन्नू सर्कस में काम करने की बात कहा करता था। वह सर्कस का पता पूछ कर सर्कस में गया। छन्नू वहां सर्कस में ही मिल गया। वह वहां दुःखी था। सर्कस में सब लोग उसे देखकर हंसते थे। उसे पैसे तो मिलते थे लेकिन इतने नहीं कि वह बचाकर घर भेज सके। बन्नू भैया को देखते ही छन्नू उससे लिपट गया।

बन्नू ने छन्नू से कहा कि उसे परेशान होने की जरूरत नहीं है। जंगल में खाने को बहुत है, यदि कम पड़ेगा तो वो खेती करेंगे, कड़ी मेहनत करेंगे, उन्हें शहर में आकर काम करने की कोई जरूरत नहीं है। छन्नू ने बताया कि सर्कस वाले उसे जाने नहीं देंगे, वो बहुत बुरे हैं। सर्कस के मालिक ने बन्नू को देख लिया।

बन्नू ने सर्कस मालिक को छन्नू को छोड़ने के लिए कहा लेकिन उसने बन्नू को भी नहीं जाने दिया और कहा कि वे दोनों एक महीने तक उनके लिए काम करें तब वे दोनों जा सकते हैं। बन्नू और छन्नू दोनों भाई उस सर्कस में काम करने लगे।

....

आश्रम में मालती ने गरीब और अनाथ बच्चों की ऐसी सेवा की जिसे देखकर लगता था कि ये मालती के खुद के बच्चे हों। बच्चे मालती से और मालती बच्चों से बहुत खुश थी। आये दिन आश्रम में नये बच्चे आते। मालती उन्हें अपना लेती। मालती के अलावा आश्रम में मालती की एक सहायिका और थी जिसका नाम अनामिका था। मालती अनामिका को अपनी छोटी बहन मानती थी। लेकिन मालती को सुनैना की बहुत याद आती। उसकी सुनैना से मिलने की बड़ी इच्छा

होती, लेकिन वह क्या कर सकती थी। उसने सुनैना को ढूंढने की बहुत कोशिश की लेकिन सब बेकार रही।

एक दिन अनामिका आश्रम के बच्चों को लेकर उसी सर्कस में गयी जहां बोने काम करते थे। सर्कस का शो खत्म हो गया। यह महीने का आखरी दिन था, और आज सर्कस मालिक को बौनों के काम का हिसाब करना था, लेकिन उसके मन में खोट था और वह बौनों को उनका हिसाब नहीं देना चाहता था। जब उसने देखा कि बौने सर्कस में काम नहीं करना चाहते तो वह सर्कस में हुये नुकसान का बहाना बनाकर उनके साथ मारपीट करने लगा। जब शो के बाद अनामिका वहां बच्चों को लेकर वहां से लौटने लगी तब उसने देखा कि सर्कस का मालिक बन्नू और छन्नू से बदसलूकी कर रहा है। अनामिका ने इसका विरोध किया तो सर्कस का

मालिक बोला कि इन बौनों की इतनी चिन्ता है तो इन्हें अपने साथ ही ले जाओ।

बन्नू और छन्नू अनामिका के साथ हो लिए। आश्रम के बच्चों ने जब देखा कि बौने उनके साथ आश्रम चल रहे हैं तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। वो सब उछलते, कूदते आश्रम की तरफ जाने लगे। बन्नू और छन्नू को बच्चों और अनामिका का साथ पंसद आया।

अनामिका एक 18 साल की साधारण सी दिखने वाली लड़की थी। जितने दुःख मालती और सुनैना ने भोगे थे उससे कहीं ज्यादा अनामिका ने। मालती, अनामिका को तब लायी थी जब अनामिका संसार के दुःखों से भर कर आत्महत्या करने जा रही थी। अनामिका आज संसार में नहीं होती यदि मालती सही समय पर नहीं पहुंची होती।

....

आश्रम पहुंच कर अनामिका ने मालती को सारी बात बताई कि किस तरह से सर्कस वालों ने बन्नू और छन्नू को परेशान किया। मालती ने बन्नू और छन्नू की मरहम-पट्टी की। मालती ने आज तक बहुत सारे अनाथ बच्चों, घायल लोगों की सेवा की थी, लेकिन ऐसी अनुभूति उसे आज तक नहीं हुयी जैसी अनुभूति उसे बन्नू की सेवा करने में हो रही थी। मालती ने बन्नू और छन्नू को कुछ दिन आश्रम में रूकने और उसके बाद अपने जंगल वापस जाने के लिए कहा। छन्नू ने बताया कि उसका एक भाई नन्नू और शहर की एक लड़की सुनैना जंगल में अकेले हैं, इसलिए वे लोग कल सुबह होते ही जंगल चले जायेंगे। जैसे ही मालती ने सुनैना का नाम सुना, उसकी उत्सुकता बढ़ गयी। वह बन्नू से बोली की सुनैना कौन है तो बन्नू

ने बताया कि आज से 10 साल पहले भी वे शहर आये थे और उन्होंने एक लड़की को सड़क के किनारे पड़े देखा तो उसे उठाकर जंगल ले गये थे।

मालती को लगा कि शायद यह सुनैना कोई और होगी। लेकिन उसका मन नहीं माना। वह आश्रम की जिम्मेवारी अनामिका के उपर छोड़कर सुबह होते ही बन्नू और छन्नू के साथ जंगल की तरफ रवाना हुयी।

नन्नू उस समय सुनैना को जंगल के भूतों की कहानियां सुना रहा था कि उसी समय मालती, बन्नू और छन्नू आ गये। मालती, सुनैना को पहचान नहीं पायी क्यों कि सुनैना की शक्ल–सूरत बदल चुकी थी। लेकिन सुनैना ने अपनी दीदी को पहचान लिया। दोनों बहनें फूट–फूट कर रोई, उनके गम और खुशी का कोई ठिकाना नहीं था।

छन्नू, मालती को जंगल की सैर करवाता। मालती, सुनैना, अनामिका, बन्नू, नन्नू, छन्नू अब एक दूसरे का सहारा बन गये थे। आश्रम के बच्चों को जंगल से और तीनों बौनों को आश्रम से लगाव हो गया था। आश्रम की समस्यायें अब बौनों की हो गयी थीं और बौनों का अकेलापन बच्चों ने दूर कर दिया। इन दोनों परिवारों की कहानी लगभग एक जैसी थी। इनके दुःख भी एक जैसे और सुख भी एक जैसे।

आश्रम में जंगल के शहद की मिठास आ गयी और जंगल मालती की खुशबू से महक उठा।

समाप्त।

....